(भीतरी पाट से)

न्यीशी लोकगाथा : स्वरूप एवं संवेदना

डूरी शांति

अरुणाचल प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुषमा के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यह प्रदेश ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों, नदियों, घाटियों और घने जंगलों से युक्त है। यहाँ नदियाँ और झरने अपना राग सुनाते हुए पहाड़ों और घाटियों को गुंजायमान बना देती हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा प्रदेश है। इस प्रदेश में छोटी-बड़ी नदियाँ हैं, जो इस पावन भूमि को अपने जल से सींचती हुई इस धरती को उपजाऊ बनाती हैं। इस कारण यहाँ के अधिकांश जिलों के नाम यहाँ बहती नदियों के नाम पर आधारित है। जैसे - सियाङ, सुबनसिरी, कामेङ, कुरुङ- कुमें, पापुम-पारे, लोहित आदि। अरुणाचल प्रदेश में कुल 27 प्रमुख जनजातियाँ और 100 से अधिक उप जनजातियाँ हैं। जिसमें प्रमुख है- न्यीशी, आदी, आपातानी, तागीन, गालो, ईदु मिश्मी, मोमपा, सिगंफो आदि इस प्रदेश की विभिन्न जनजातियों की जीवन शैली और लोक विश्वास, त्योहार सामाजिक ढांचे का अपना महत्त्व है, जो इन्हें विरासत में अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ है। इनके रहन-सहन धार्मिक आस्थाएँ समाज-व्यवस्था और रीति-रीवाज तथा भाषाएँ और बोलियाँ भी एक- दूसरे से भिन्न हैं। इनके बोलियों के नाम इनके समुदाय के नाम पर रखे गए हैं। जैसे-न्यीशी जनजाति की बोली का नाम 'न्यीशी' और आदी जनजाति की बोली को 'आदी' से अभिहित किया जाता है। इस प्रदेश के खामती एवं मोमपा जनजाति के पास अपनी लिपि है परंतु शेष सभी जनजातियों में लिपि का अभाव है। लिपि की कमी के चलते जनजातियों के जीवन से जुड़े हुए सभी पहलुओ क संरक्षण अनादि काल से लोक ही कर रहा है। लिपि के अभाव में सभी जनजातियों के सुव्यवस्थित लोक साहित्य मौखिक रूप में ही विद्यमान हैं। इन लोक साहित्य में सृष्टि की उत्पत्ति मनुष्य की उत्पत्ति एवं विकास तथा तमाम प्रकृति की संरचना जीवन से जुड़े आचार, संहिता, समस्याएँ, नियम-कानून सारी वस्तुओं की जानकारी लोक साहित्य में मौजूद हैं। अरुणाचल प्रदेश का लोक-साहित्य बहुत समृद्ध एवं विस्तृत है।

न्यीशी जनजाति का सामान्य परिचय एवं उनका लोक साहित्य

अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में 'न्यीशी' जनजाति संख्या एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी है। इस जनजाति के लोग कुल पाँच जिलों में बसे हुए हैं। जिसमें ईस्ट कामेङ, पाक्के केसाङ, करा-दादी, कुरुङ कुमे, पापुम-पारे, कई पन्योर, उप्पर सुबनसिरी तथा असम के उत्तरी लखीमपुर के कुछ इलाके में बसे हुए हैं।

न्यीशी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, 'न्यी' और 'शी' 'न्यी' का अर्थ है 'मनुष्य' और 'शी' का अर्थ है 'संसार'। अर्थात संसार में बसे हुए मनुष्य को 'न्यीशी' कहते हैं। न्यीशी समाज में तीन तरह के मुख्य त्यौहार मनाये जाते हैं- न्योकुम-यूलो, लोड़ते-हाते और बूरी-यूलो। न्यीशी जनजाति में सबसे बड़े पैमाने पर न्योकुम युलो त्यौहार मनाया जाता है। इस अवसर पर मिथुन की बलि चढ़ाई जाती है और साथ ही अतङ अर्थात चावल का पाउडर तथा 'आपोङ, अर्थात स्थानीय पेय पदार्थ को चढ़ाया जाता है और सारे पुरुष 'बूया' नृत्य करते हैं। जिसे न्यीशी में 'बूया-ग्युमनाम' कहते हैं। न्यीशी जन स्वयं को 'आबोतानी' का वंशज मानते हैं। वे

'दोन्यी-पोलो' अर्थात सूर्य देवी एवं चंद्र देव की आराधना करते हैं। वे 'आने दोन्यी' को अपनी कुल देवी मानते हैं। इसलिए न्यीशी लोगों को 'अग्नि पुत्र' भी कहते हैं। न्यीशी लोक साहित्य का मूल रूप मौखिक साहित्य रहा है। यह पारंपरिक तौर पर लोक-जीवन का अभिन्न अंग है जो लोगों की जुबान और हृदय में रच बस गया है। इस लोक साहित्य में न्यीशी समाज के हर्ष-विषाद, सुख-दुख, प्रेम, विरह, यातनाओं और जीवन के अनुभवों की झांकी है, यह न्यीशी जनजाति के लोगों को दिशा दिखाती है। जैसे न्यीशी में यह कहावत बेहद प्रचलित है-

नो न्यीयाम काजे माब का
न्यी गे संङचा लो, भदर ऐ सले बे सले भदर बे रिदूने ॥

अर्थात किसी भी व्यक्ति को कमजोर नहीं समझना चाहिए। जैसे नदी में कहीं ठहराव रहता है और कहीं बहाव। उसी प्रकार व्यक्ति का जीवन भी उथल-पुथल से भरा हुआ रहता है।

न्यीशी लोक गाथा का स्वरूप

गाथा का अर्थ है गाकर कही जाने वाली कथाएँ। न्यीशी में लोक गाथा को सामान्य तौर पर 'न्यीतिङ बिमिन या न्यीतिङ बरनाम' कहते हैं न्यीशी लोक गाथा मुख्यतः 'कथात्मकता' गेयता तथा लोक मानवीय तत्त्वों से संबद्ध श्रुत परंपराओं पर आधारित न्यीशी लोक समाज भावाभिव्यक्ति का साधन है। इसमें लोक कथाओं का पद रूप रहता है। यह न्यीशी लोक गाथाएँ किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर समूह की कृति है। यह चिरकाल से वेदों की भाँति मौखिक परंपरा में जीवित है। न्यीशी समाज अधिकांश लोकगाथाओं द्वारा ही अपने पूर्वजों एवं पारंपरिक रीति-रिवाजों से अवगत होते आ रहे हैं। न्यीशी लोक गाथाओं में उपदेश निहित रहते हैं जो कि मनुष्य को समाज के बंधन में बँधे रहने में सहायता करते हैं।

न्यीशी लोकगाथाओं में निहित संवेदना

न्यीशी लोकगाथाओं का वर्गीकरण करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि वह क्रमिक एवं सुसंबद्ध हो। इन लोकगाथाओं को कई पक्षों में रखकर देख सकते हैं :-

ऐतिहासिक लोकगाथाएँ-

न्यीशी समाज में अनेक ऐसी लोकगाथाएँ हैं, जो यहाँ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालती हैं। इसमें पृथ्वी की संरचना से लेकर आबोतानी के द्वारा स्थापित सामाजिक व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसमें आबोतानी और उनके वंशजों के ऐतिहासिक मानवीय संबंधों का वर्णन मिलता है। न्यीशी समाज की ऐतिहासिक लोकगाथाओं में निम्नलिखित गाथाएँ अधिक प्रचलित हैं :- 'आतर'

डो दोमा डो दोमा, हुगू काम दोमा
हुगू काम दोमा
ताकर तासे अ हुगू ते काम दोमा के,
डूलगे मङनाम सी आतू गे सी दोकी ते दोनो
सोगे आतर सी आने, ग दोन्यी के आतर अ।
आने गे आतर टूरकी हो,
डा के पटर चूरकी लो।

प्रस्तुत लोकगाथा में लोकगायिकाओं ने सृष्टि का सर्जन शून्य से माना है। और कहते हैं सर्वप्रथम (सूर्य

देवी) आने दोन्यी का निर्माण हुआ था आने दोन्यी ही ऊर्जा का केंद्र है। इसी से सृष्टि के प्रत्येक जीवों को ऊर्जा शक्ति प्राप्त होती है।

माँ-बेटी से संबंधित लोकगाथाएँ

माँ-बेटी के संबंधों को भी एक रुदन गाथा के रूप में गाया जाता है। जिसे 'न्यीमे काबनाम' कहते हैं। इसमें माँ बेटी के विवाह के अवसर पर परिवार से बिछड़ने पर अपने ममतामय स्वर में बेटी को विदाई देते हैं। न्यीमे काबनाम में बेटियां अपनी बेटी होने पर माँ से लाचारी एवं क्षोभ व्यक्त करती हैं। वह कहती हैं:

दुमदङ ने ङो

दुमदङ ने ङो न्योदङ ग सोरङग
ङो दोगे मङला सी मङतुला
आने दोरी गो बूता सी मातुला आबू हीला गो पाता सी मातुला।

इस गाथा के द्वारा एक लड़की अपने दर्द को करुण रुदन के रूप में व्यक्त करती है। जहाँ वह अपने ही परिवार में मेहमानों की तरह रहती है और एक दिन विवाह के समय विदा होकर चली जाती है।

न्यीशी लोक गाथाओ में व्यक्त अंह के प्रति आक्रोश

अंहकर का परिणाम हमेशा विनाशकारी ही होता है। न्यीशी जनजाति में यह मानयता है कि अंह का नाश करने के पश्चात ही व्यक्ति सुखद जीवन व्यतीत कर सकता है। यह अंहकार भाई-भाई के बीच दरार उत्पन्न कर सकते हैं। प्रस्तुत लोकगाथा में इस बात पर जोर दिया गया है-

'आबङ कोरो को माकुमा अ बुरू कोरोको मान्यूमा'
बूरु कोरोको मान्यूम अ आने कोरोको लरिङ अ

न्यीशी लोकगाथा में व्यक्त नैतिक शिक्षा

अमूमन प्रत्येक लोकगाथाओं में कोई न कोई पाठ अवश्य निहीत रहता है। न्यीशी लोकगाथाओं में कई ऐसी गाथाएँ हैं, जिसमें से नैतिक ज्ञान प्राप्त होता है। जिंदगी में सही रास्ते पर चलने के लिए अपने माँ-बाप की सिखाई गई बातों को न मानना किस प्रकार हानिकारक होता है, यह प्रस्तुत लोकगाथा में व्यक्त किया गया है।

'लङरुम बरजीक'
नामपिङ पोरिङ गे दूगू लीनामें,
आमपोङ दूकू रे नमङ दूकू रे।

इसमें यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार माँ-बाप की बातों का उल्लंघन करने पर वह बच्ची एक भयानक मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। यह माना जाता है कि नदी, झरने और तालाबों में भी 'उयू' (भूत) बसते हैं, जो इंसानों को खा जाते हैं। यह कहानी है उस बच्ची को जो प्रतिदिन नदी में जाकर मछलियाँ एवं झींगा पकड़ती थी और एक दिन उसी नदी के प्रेत ने उसे पत्थरों में कैद कर लिया और धीरे-धीरे नदी की मछलियों ने उस बच्ची के शरीर को खा लिया।

न्यीशी लोक गाथाओं में न्यीशी जनजाति की उत्पत्ति से लेकर वंश परंपरा को क्रम से मुखरित किया जाता है और साथ ही जीवन के मूल्यों के बारे में भी समझाया गया है। यह पारंपरिक तौर पर लोक-जीवन का

अभिन्न अंग है। जो लोगों की जुबान और हृदय में रच-बस गया है। यह लोकगाथाएँ न्यीशी समाज के हर्ष-विषाद सुख-दुख, प्रेम, पीड़ा, यातनाओं और जीवन के अनुभवों को दर्शाती हैं। न्यीशी समाज के विकास-क्रम में अनेक परिवर्तन हुए, परंतु इनके स्वरूप में अधिक परिवर्तन नही हुआ है। आज आधुनिकीकरण अन्य चुनौतियों एवं हस्तक्षेप के कारण इनको संरक्षित एवं संवर्धित करना हमारा अनिवार्य दायित्व बन गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

सिंह, धर्मराज. (1990). *अरुणाचल की आदी जनजाति का समाजभाषिकी अध्ययन*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ.-30

परमार, वीरेंद्र. (2009). *अरुणाचल के आदिवासी और उनका लोकसाहित्य*. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन. पृ.- 41

शर्मा, हरीश कुमार. (2012). *भाषा संस्कृति और साहित्य*. नई दिल्ली: अनंग प्रकाशन. पृ.-80

नाबाम, जोराम यालाम. (2014). न्यीशी जनजाति का समाजभाषिक अध्ययन. असम: विजय भारती प्रकाशन. पृ. 111

*(**लेखकीय परिचय :** डॉ. डूरी शांति देरा नातुङ शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। मोबा: 9774549899, ई-मेल : ngurishanti1@gamil.com)*